ع ٢ ١٩

اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۵۲﴾ ع

मगर नसीह़त सारे जहां के लिये[68]

ایاتها ۵۲ ﴿٦٩ سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ ٧٨﴾ رکوعاتها ٢

सूरए ह़ाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़्‌म वाला[1]

اَلْحَآقَّةُ ﴿۱﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿۲﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿۳﴾ كَذَّبَتْ

वोह ह़क़ होने वाली[2] कैसी वोह ह़क़ होने वाली[3] और तुम ने क्या जाना कैसी वोह ह़क़ होने वाली[4] समूद और आ़द ने

ثَمُوْدُ وَ عَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿۴﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِیَةِ ﴿۵﴾ وَ اَمَّا عَادٌ

इस सख़्त सदमा देने वाली को झुटलाया तो समूद तो हलाक किये गए ह़द से गुज़री हुई चिंघाड़ से[5] और रहे आ़द

فَاُهْلِكُوْا بِرِیْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِیَةٍ ﴿۶﴾ سَخَّرَهَا عَلَیْهِمْ سَبْعَ لَیَالٍ وَّ ثَمٰنِیَةَ

वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ

اَیَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِیْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ

दिन[6] लगातार तो उन लोगों को उन में[7] देखो पिछड़े (मरे) हुए[8] गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने)

خَاوِیَةٍ ﴿۷﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِیَةٍ ﴿۸﴾ وَ جَآءَ فِرْعَوْنُ وَ مَنْ قَبْلَهٗ

हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुवा देखते हो[9] और फ़िरऔ़न और उस से अगले[10]

وَ الْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿۹﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

और उलटने वाली बस्तियां[11] ख़त़ा लाए[12] तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना[13] तो उस ने उन्हें बढ़ी चढ़ी

68 : जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र ब मा'ना फ़ज़्लो शरफ़ के है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम जहानों के लिये शरफ़ हैं इन की त़रफ़ जुनून की निस्बत करना कूर बात़िनी है। (مدارک) 1 : सूरए ह़ाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, दो सो छप्पन 256 कलिमे, एक हज़ार चार सो तेईस 1423 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ियामत जो ह़क़ व साबित है और इस का वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़त़ई है जिस में कोई शक नहीं। 3 : या'नी वोह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है। 4 : जिस के अहवाल व अह़वाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का त़ाइर परवाज़ नहीं कर सकता। 5 : या'नी सख़्त होलनाक आवाज़ से 6 : चहार शम्बा से चहार शम्बा (बुध से बुध) तक, आख़िर माहे शव्वाल में निहायत तेज़ सरदी के मौसिम में 7 : या'नी उन दिनों में 8 : कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया 9 : कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुब्ह़ को वोह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। 10 : उस से भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार 11 : ना फ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत़ की बस्तियों के, येह सब 12 : अफ़्आ़ले क़बीह़ा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए 13 : जो उन की त़रफ़ भेजे गए थे।

www.dawateislami.net

رَّابِیَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِی الْجَارِیَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ

गिरिफ़्त से पकड़ा बेशक जब पानी ने सर उठाया था[14] हम ने तुम्हें[15] कश्ती में सुवार किया[16] कि इसे[17] तुम्हारे लिये

تَذْكِرَةً وَّ تَعِیَهَاۤ اُذُنٌ وَّاعِیَةٌ ﴿١٢﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِی الصُّوْرِ نَفْخَةٌ

यादगार करें[18] और इसे मह़फ़ूज़ रखे वोह कान कि सुन कर मह़फ़ूज़ रखता हो[19] फिर जब सूर फूंक दिया जाए

وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّ حُمِلَتِ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

एक दम और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़्अ़तन चूरा कर दिये जाएं

فَیَوْمَىٕذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَ انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِیَ یَوْمَىٕذٍ

वोह दिन है कि हो पड़ेगी वोह होने वाली[20] और आस्मान फट जाएगा तो उस दिन उस का पतला

وَّاهِیَةٌ ﴿١٦﴾ وَّ الْمَلَكُ عَلٰۤى اَرْجَآىٕهَا ؕ وَ یَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ

ह़ाल होगा[21] और फ़िरिश्ते उस के कनारों पर खड़े होंगे[22] और उस दिन तुम्हारे रब का अ़र्श अपने ऊपर

یَوْمَىٕذٍ ثَمٰنِیَةٌ ﴿١٧﴾ یَوْمَىٕذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِیَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا

आठ फ़िरिश्ते उठाएंगे[23] उस दिन तुम सब पेश होगे[24] कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी तो वोह

مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَیَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِیَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّیْ ظَنَنْتُ

जो अपना नामए आ'माल दहने हाथ में दिया जाएगा[25] कहेगा लो मेरे नामए आ'माल पढ़ो मुझे यक़ीन था

اَنِّیْ مُلٰقٍ حِسَابِیَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِیْ عِیْشَةٍ رَّاضِیَةٍ ﴿٢١﴾ فِیْ جَنَّةٍ عَالِیَةٍ ﴿٢٢﴾

कि मैं अपने ह़िसाब को पहुंचूंगा[26] तो वोह मन मानते चैन में है बुलन्द बाग़ में

قُطُوْفُهَا دَانِیَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِیْٓـٴًـۢا بِمَاۤ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ

जिस के ख़ोशे झुके हुए[27] खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में

14 : और वोह दरख़्तों, इमारतों, पहाड़ों और हर चीज़ से बुलन्द हो गया था, येह बयान तूफ़ाने नूह़ का है। عَلَیْہِ السَّلَام 15 : जब कि तुम अपने आबा के अस्लाब (पीठों) में थे, ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की 16 : और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام को और उन के साथ वालों को जो उन पर ईमान लाए थे नजात दी और बाक़ियों को ग़र्क़ किया 17 : या'नी मोमिनीन को नजात देने और काफ़िरों के हलाक फ़रमाने को 18 : कि सबबे इ़ब्रत व नसीह़त हो 19 : काम की बातों को ताकि उन से नफ़्अ़ उठाए। 20 : या'नी क़ियामत क़ाइम हो जाएगी 21 : या'नी वोह निहायत कमज़ोर होगा बा वुजूद इस के कि पहले बहुत मज़बूत़ व मुस्तह़्कम था। 22 : या'नी जिन फ़िरिश्तों का मस्कन आस्मान है वोह उस के फटने पर उस के कनारों पर खड़े होंगे, फिर ब हुक्मे इलाही उतर कर ज़मीन का इह़ात़ा करेंगे। 23 : ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ामिलीने अ़र्श आज कल चार हैं, रोज़े क़ियामत उन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि इस से मलाएका की आठ सफ़ें मुराद हैं जिन की ता'दाद अल्लाह तआ़ला ही जाने। 24 : अल्लाह तआ़ला के ह़ुज़ूर ह़िसाब के लिये 25 : येह समझ लेगा कि वोह नजात पाने वालों में है और निहायत फ़रह़ व सुरूर के साथ अपनी जमाअ़त और अपने अहलो

www.dawateislami.net

الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ۬ فَیَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ

आगे भेजा[28] और वोह जो अपने नामए आ'माल बाएं हाथ में दिया जाएगा[29] कहेगा हाए किसी त़रह़ मुझे अपना नविश्ता (नामए आ'माल)

كِتٰبِیَهْ ﴿٢٥﴾ ۚ وَ لَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِیَهْ ﴿٢٦﴾ ۚ یٰلَیْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِیَةَ ﴿٢٧﴾ ۚ مَاۤ

न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा ह़िसाब क्या है हाए किसी त़रह़ मौत ही क़िस्सा चुका जाती[30] मेरे

اَغْنٰى عَنِّیْ مَالِیَهْ ﴿٢٨﴾ ۚ هَلَكَ عَنِّیْ سُلْطٰنِیَهْ ﴿٢٩﴾ ۚ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ۙ ثُمَّ

कुछ काम न आया मेरा माल[31] मेरा सब ज़ोर जाता रहा[32] उसे पकड़ो फिर उसे त़ौक़ डालो[33] फिर

الْجَحِیْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ ؕ

उसे भड़कती आग में धंसाओ फिर ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है[34] उसे पिरो दो[35]

اِنَّهٗ كَانَ لَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ ﴿٣٣﴾ ۙ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ﴿٣٤﴾ ؕ

बेशक वोह अ़ज़मत वाले **अल्लाह** पर ईमान न लाता था[36] और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता[37]

فَلَیْسَ لَهُ الْیَوْمَ هٰهُنَا حَمِیْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّ لَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِیْنٍ ﴿٣٦﴾

तो आज यहां[38] उस का कोई दोस्त नहीं[39] और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप

ع لَّا یَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ ع فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ۙ وَ مَا لَا

इसे न खाएंगे मगर ख़त़ाकार[40] तो मुझे क़सम उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो और जिन्हें तुम

تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ ۙ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِیْمٍ ﴿٤٠﴾ ۚۙ وَّ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ

नहीं देखते[41] बेशक येह क़ुरआन एक करम वाले रसूल[42] से बातें हैं[43] और वोह किसी शाइ़र की बात नहीं[44]

अक़ारिब से **26 :** या'नी मुझे दुन्या में यक़ीन था कि आख़िरत में मुझ से ह़िसाब लिया जाएगा। **27 :** कि खड़े बैठे लैटे हर ह़ाल में ब आसानी ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा **28 :** या'नी जो आ'माले सालेह़ा कि दुन्या में तुम ने आख़िरत के लिये किये। **29 :** जब अपने नामए आ'माल को देखेगा और उस में अपने बद आ'माल मक्तूब पाएगा तो शरमिन्दा व रुस्वा हो कर **30 :** और ह़िसाब के लिये न उठाया जाता और येह ज़िल्लतो रुस्वाई पेश न आती **31 :** जो मैं ने दुन्या में जम्अ़ किया था वोह ज़रा भी मेरा अ़ज़ाब टाल न सका **32 :** और मैं ज़लील व मोह़ताज रह गया। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस से उस की मुराद येह होगी कि दुन्या में जो ह़ुज्जतें मैं किया करता था वोह सब बात़िल हो गईं अब **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम के ख़ाज़िनों को ह़ुक्म देगा **33 :** इस त़रह़ कि उस के हाथ उस की गरदन से मिला कर त़ौक़ में बांध दो **34 :** फ़िरिश्तों के हाथ से **35 :** या'नी वोह ज़न्जीर उस में इस त़रह़ दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है। **36 :** उस की अ़ज़मत व वह़दानिय्यत का मो'तक़िद न था। **37 :** न अपने नफ़्स को न अपने अह्ल को न दूसरों को। इस में इशारा है कि वोह बअ़्स का क़ाइल न था क्यूं कि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदले की उम्मीद रखता ही नहीं, मह़ज़ रिज़ाए इलाही व सवाबे आख़िरत की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो बअ़्स व आख़िरत पर ईमान ही न रखता हो उसे मिस्कीन को खिलाने की क्या ग़रज़। **38 :** या'नी आख़िरत में **39 :** जो उसे कुछ नफ़्अ़ पहुंचाए या शफ़ाअ़त करे **40 :** कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार। **41 :** या'नी तमाम मख़्लूक़ात की क़सम जो तुम्हारे देखने में आए उस की भी जो न आए उस की भी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "مَاتُبْصِرُوْنَ" से दुन्या और "مَالَاتُبْصِرُوْنَ" से आख़िरत मुराद है, इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के और भी कई क़ौल हैं। **42 :** मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **43 :** जो उन के रब عَزَّوَعَلٰی ने फ़रमाई। **44 :** जैसा कि कुफ़्फ़ार कहते हैं।

www.dawateislami.net

قَلِيۡلًا مَّا تُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۴۱﴾ وَلَا بِقَوۡلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۴۲﴾

कितना कम यक़ीन रखते हो[45] और न किसी काहिन की बात[46] कितना कम ध्यान करते हो[47]

تَنۡزِيۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۳﴾ وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ ﴿۴۴﴾

उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है और अगर वोह हम पर एक बात भी बना कर कहते[48]

لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ﴿۴۵﴾ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ الۡوَتِيۡنَ ﴿۴۶﴾ فَمَا مِنۡكُمۡ

ज़रूर हम उन से ब क़ुव्वत बदला लेते फिर हम उन की रगे दिल काट देते[49] फिर तुम में कोई

مِّنۡ اَحَدٍ عَنۡهُ حٰجِزِيۡنَ ﴿۴۷﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذۡكِرَةٌ لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنَّا

उन का बचाने वाला न होता और बेशक येह क़ुरआन डर वालों को नसीह़त है और ज़रूर हम

لَنَعۡلَمُ اَنَّ مِنۡكُمۡ مُّكَذِّبِيۡنَ ﴿۴۹﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسۡرَةٌ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۵۰﴾ وَ

जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं और बेशक वोह काफ़िरों पर ह़सरत है[50] और

اِنَّهٗ لَحَقُّ الۡيَقِيۡنِ ﴿۵۱﴾ فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ ﴿۵۲﴾ ع ٢ ١٥ ٦

बेशक वोह यक़ीनी ह़क़ है[51] तो ऐ मह़बूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब की पाकी बोलो[52]

اٰياتها ٤٤ | ٧٠ سُوۡرَةُ الۡمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ ٧٩ | ركوعاتها ٢

सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में चवालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿۱﴾ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ لَيۡسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿۲﴾ مِّنَ اللّٰهِ

एक मांगने वाला वोह अ़ज़ाब मांगता है जो काफ़िरों पर होने वाला है उस का कोई टालने वाला नहीं[2] वोह होगा अल्लाह की

45 : बिल्कुल बे ईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न येह शे'र है न इस में शे'रिय्यत की कोई बात पाई जाती है 46 : जैसा कि तुम में से बा'ज़े काफ़िर इस किताबे इलाही की निस्बत कहते हैं। 47 : न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इस की ता'लीमों पर ग़ौर करते हो कि इस में कैसी रूह़ानी ता'लीम है न इस की फ़साह़तो बलाग़त और ए'जाज़े बे मिसाली पर ग़ौर करते हो जो येह समझो कि येह कलाम 48 : जो हम ने न फ़रमाई होती तो 49 : जिस के काटते ही मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। 50 : कि वोह रोज़े क़ियामत जब क़ुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और इस के इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अ़ज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़्सोस करेंगे और ह़सरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। 51 : कि इस में कोई शको शुबा नहीं। 52 : और उस का शुक्र करो कि उस ने तुम्हारी त़रफ़ अपने इस कलामे जलील की वह़्य फ़रमाई। 1 : सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चवालीस 44 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो उन्तीस 929 ह़र्फ़ हैं। 2 : **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने जब अहले मक्का को अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह आपस में कहने लगे कि इस अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ कौन लोग हैं और येह किन पर आएगा ? सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net